ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

प्रवासी हिंदी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना

प्रियदर्शिनी बारीक़
पीएच. डी., शोधार्थी
मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी,
गच्चीबोली, हैदराबाद ५०००३२

शोध सारांश

हिंदी साहित्य इतिहास सागर की तरह विशाल है। सागर में जैसे बहुत सारी नदिओं का संगम होता है, वैसे ही विविध विमर्श के साथ हिंदी साहित्य एक नया रूप धारण किया है। आज कल प्रवासी साहित्य एक नव विमर्श के साथ हिंदी साहित्य क्षेत्र में पदार्पण किया है। लगभग डेढ़ सौ वर्षों के वाद प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य क्षेत्र में अपना स्थान मजबूत किया है। २१विं सदी में आकर ही प्रवासी साहित्य अपना स्थान सुदृढ़ कर पाई है। प्रवासी साहित्य के बारे में चर्चा करने से पहेले उसके मूल अर्थ में जाना जरुरी है। प्रवासी साहित्य का अर्थ है कि- जो भी भारतीय अपने देश छोड़ कर प्रवास जाते है, एवं वहां निवास करते हुए अपने भाषा एवं संस्कृति से जुड़े रह कर अपने मातृभाषा से रचना करते है ,उस साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में मूल संवेदना छूट जा रहा है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपने रचनाओं के माध्यम से इन्ही संवेदनाओं को दिखने की कोशिश किए है। संवेदना विविन्न प्रकार के होते है जैसे कि दुःख की संवेदना, सामाजिक संवेदना, आर्थिक संवेदना, धार्मिक एवंसांस्कृतिक संवेदना आदि। प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने विदेश में रह कर अपने इतिहास, संस्कृति एवं सभ्यता को आज भी जिवंत रखे है। उस साहित्यकारों में सुदर्शना प्रियदर्शिनी, सुषमा वेदी, सुधा ओम ढींगरा,उषा राज सक्सेना, ज़किया ज़ुबैरी आदि प्रमुख है।

भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति में अनेक अंतर देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता देखने को मिलता है। अनेक धर्म, संप्रदाय, रीती-रिवाज,

Copyright © 2020 Authors

परम्परा,खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार आदि रहते हुए भारतीय संस्कृति में अभिन्न सम्बन्ध देखने को मिलता है। हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रचार- प्रसार का अधिक श्रेय प्रवासी साहित्यकारों को जाता है। जिन्होंने प्रवास में रहते हुए भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को अपना कर साहित्य सृजन करते हैं। उसके साथ-साथ विदेशिओं को भी भारतीय संस्कृति की और आकर्षित करवाते है। प्रवासी साहित्यकार सिर्फ भारत के संस्कृति को नहीं उसके साथ-साथ विभिन्न देश एवं विदेशों के संस्कृति को भी अपने साहित्य में दर्शाते है। जिसके माध्यम जन-साधारण एक जगह बैठ कर विभिन्न संस्कृति के बारे में ज्ञान अर्जन कर रहे हैं। हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार राजेंद्र यादव प्रवासी साहित्य को परिभाषित करते हुए कहते है कि – "प्रवासी साहित्य संस्कृतियों के संगम की खुबसूरत कथाएँ है |"[1]

हमारा भारत वर्ष का एक अलग एवं अनोखा इतिहास रहा है। इसकी सभ्यता एवं संस्कृति सिर्फ भारत वर्ष में नहीं पुरे दुनिया में व्याप्त है। यह विश्व की प्राचीनतम एवं अधिक समृद्ध संस्कृति है। 'बसुधैब कुटुम्बकम' भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। भारत के अनेक लोग विश्व के अलग अलग देशों में वसे है। वह सिर्फ आर्थिक रूप से एक-दुसरे के साथ सम्बन्ध नहीं रखते है। वह आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूप से एक- दुसरे के साथ सम्बन्ध बनाए है। प्रवासी साहित्यकारों को बहुत सारी कष्टों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि प्रवास की पीड़ा, अपने धरती प्रति प्रेम, अपने भाषा एवं संस्कृति केलिए संघर्ष, नए देश एवं नए जमीन केलिए संघर्ष आदि। इतने कष्ट झेलने के बाबजूद भी उन्होंने अपने संस्कृति एवं मातृभूमि को नहीं भूले है। इसी सम्बन्ध में विक्रम विश्व विद्यालय की शोध-अध्यता स्वर्णलता खन्ना कहती है कि – " साहित्य उसी भाषा में लखा जाता है जिस भाषा के संस्कार व्यक्ति को बच्चपन से मिलते हैं। साहित्य की अभिव्यक्ति यदि विदेशी भाषा में की जाए तो ऐसा साहित्य संवेदनशील नहीं होगा, इसलिए विदेश में बैठे हिंदी साहित्यकारों ने अपने लखने का माध्यम हिंदी चुना, क्योंकि इसके माध्यम से पीछे छुट चुके देश के आतंरिक सम्बन्ध को बनाये रखना चाहते थे |"[2]

 Copyright © 2020 Authors

प्रवासी भारतीयों को दो संस्कृति का समिश्रण करने में नई संस्कार, नए सोच, नए विचार, नए दृष्टिकोण से देखना पड़ता है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में आज हम सब परिवार एवं समाज से दूर होते जा रहे है। संस्कृति के माध्यम से इसी सम्बन्ध को जोड़े रखने का काम प्रवासी साहित्यकारों ने कर रहे है। आज अनेक प्रवासी साहित्यकारों ने अपने रचना के माध्यम से सांस्कृतिक संवेदना को आज के पीढ़ी के अन्दर उजागर करने की कोशिश किए है। प्रवासी साहित्य की प्रमुख लेखिका डॉ. सुदर्शना प्रियदर्शिनी की कहानी **'अखबारवाला'** में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को हमे मिलता है। **'अखबारवाला'** एक छोटी कहानी है। परन्तु इसका चित्रण अत्यन मार्मिक ढंग से लेखिका ने किए है। इस कहानी में नायिका जया भारतीय संस्कार, संस्कृति, भावुकता एवं संवेदनशीलता को साथ लेकर विदेश में रहती है। वहां की संस्कृति एवं परिवेश से वह परेशान हो जाति है। वह लोगों से मिलना चाहती है। जया की एक पडोसी है, जो हमेशा अखबार उठाने आते है , एक दिन सुबह उनका निधन हो जाता है। परन्तु चारों और सन्नटा है। उसके आस-पास दो अंग्रेजी आदमी खड़े है एवं शव ले जाने वाला गाडी था। जया उस अंग्रेजी आदमी से पूछने की आग्रह की परन्तु उसको कुछ मालुम नहीं था। जया विचलित हो जाति है, कारण भारत में मृत्यु की संस्कार अत्यंत अच्छे ढंग से किया जाता है। इसके सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि – "चारों तरफ सन्नाटा था। एक भी व्यक्ति नहीं था। आसपास आने-जाने वाले भी भी फ्यूनरल-वैन को देख कर रास्ता बदल रहे थे। कहीं किसी खिड़की से कोई चेहरा नहीं झाँका। किसी आगन में बंधा कुत्ता तक नहीं भौंका ..... |"[3]

जन्म एवं मृत्यु मानव जीवन का परम सत्य है। कहा जाता है की मृत्यु हो जाने पर व्यक्ति की अंतिम संस्कार अच्छे होने पर उसके आत्मा को मुक्ति मिलती है। भारतीय लोगों की सोच है की आत्मा को मुक्ति मिलने पर ही तो उसे पुनर्जन्म प्राप्त होता है। भारतीय भले ही अपने मज़बूरी के कारण विदेश में रहते है परन्तु संस्कार तो भारतीय है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि विदेश में मृत्यु हो जाने पर उसको व्यक्तिगत मामला कह के उस बात को टाल देते है परन्तु एक भारतीय की संवेदना एवं उसकी संस्कृति है की अपरिचित पडोसी की मृत्य की खबर सुन कर घंटे भर भूखे-प्यासें वंहा बैठे रहते है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को पुराने पीढ़ी के लोग ज्यादा महत्व देते है। नए पीढ़ी के बच्चे इस बात को काल्पनिक कह कर टाल देते है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतने मात्र में लोंगों के ऊपर पड़ा है की सही गलत का फरक भी वह नहीं जान पा रहे है। भारतीय संस्कृति जैसे लोप होते जा रहा है। सुषमा वेदी की कहानी **'चिड़िया और चिल'** में इसका चित्रण देखने को मिलता है। इस कहानी में नायिका चिड़िया को उसके माता-पिता अच्छी संस्कार, अच्छा परिवेश, अच्छा भविष्य देना चाहते हैं। परन्तु जैसे चिड़िया बड़ी होती जाति है, उसके ऊपर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। और वह स्वछन्द हो कर जीना चाहती है। खुलेपन से जीना चाहती है। मता-पिता के संस्कार को वह भूलना चाहती है। घर में सिर्फ पैसों के लिए संतान बनके रहना चाहती है। जब उसके मम्मी पैसे देने में मना कर देती है, तो चिड़िया बहुत कुछ बातें उनको सुनाने लगती है। इस सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि – "ठीक है रख लो संभाल कर चिता पर रख कर साथ ले जाना जीते जी मुझे डिप्राइव करके सुख मिलता है तो लो.....मैं भी तुम दोनों के मरने का इंतजार कर लुंगी... माँ-बाप पता नहीं किस बात का बदला लेते हैं...ट्रस्ट का पैसा देंगे अपनी औलाद को नहीं.....|"[4] इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है की पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज नए पीढ़ियों के अन्दर संवेदना कम होती जा रही है। अपने परिवार एवं समाज के प्रति कर्तव्य से लोग विमुख होते जा रहे है|

आज हमे यह देखने को मिलता है की जो पुराने पीढ़ी के लोग है वह भारतीय संस्कृति को जोड़ के रखना चाहते है। परन्तु आज के नए पीढ़ी के बच्चे वह सब जानने के लिए भी इनकार कर देते है। परन्तु इन प्रवासी साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति को जोड़ के रखते है। सुषमा बेदी के और एक कहानी **'झाड'** में हमे यह देखने को मिलता है कि कहानी का नायक सैम बानार्जी जिसका असली नाम समीर है। वह भारतीयता को ख़तम करना चाहता है। अपने आपको अमेरिकियाना बोलता रहता है। अपने माता-पिता के संस्कार को मानना नहीं चाहता है। बल्कि वह अपने माता- पिता को अमेरिकियाना जैसे बनने को कहता है। परन्तु उसकी माता उससे हिंदी सिखने के लिए मजबूर करती है। इस सम्बन्ध में लेखिका माँ एवं बच्चे की संवाद से यह स्पष्ट करते है कि- "नानी से हिंदी सिख लो |"

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

"नो आई डोंट वांट टू लर्न हिंदी |"

"तुझे मालूम है, हिंदी हमारी नैशनल लैंग्वेज है |"

'नों माइंड..., आई वाज बोर्न हियर |"[5]

इस बात से यह स्पस्ट होता है कि पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतने मात्र में बढ़ चूका है की आज के बच्चे अपने मातृभाषा को भी भूलने लगे है। भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता को भी ख़तम कर रहे है। अपने देश के प्रति प्रेम, अपने मता- पिता के वात्सल्य प्रेम को भी भूलते जा रहे है |

भारतीय संस्कृति में पली-बढ़ी नारी कभी अपने संस्कृति को नहीं भूलेगी। अपने जीवन भर भी विदेश में रहे परन्तु अपने संस्कार,परम्परा,रीती-रिवाज को नहीं भूलती है। जितना भी कष्ट सहने को पड़े परन्तु वह कभी अपने पति के प्रति जो कर्तव्य है उससे विमुख नहीं होती है। ज़किया ज़ुबैरी की कहानी **'बस एक कदम में'** इसका सही चित्रण देखने को मिलता है। इस कहानी की नायिका शैली खाना बनाने के बाद हमेशा अपनी पति का इंतजार करती है। आज तक भी कभी अपने पति से यह जानने की कोशिश नहीं करती है की उनके पगार कितना है। शैली की पति घनश्याम हर रोज घर भी नहीं आता है। फिर भी शैली यह जाने की कोशिश नहीं करती है की वह कहाँ रहता है। इस सम्बन्ध में लेखिका कहती है कि- "शैली को खाना बनाने, परोसने और खिलाने में विशेष आनंद की अनुभूति होती है। शायद इसलिए उसको हमेशा घनश्याम का इंतजार रहता था। जब मेज पर उसका छोटा सा परिवार भोजन के लिए बैठता वह सबके लिए गरमा-गरम फुलर हुए फुल्के बना कर परोसती है। भारतीय संस्कार में पली-बढ़ी लड़की...संस्कारों को समझती.....|"[6] इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह दिखानी की कोशिश किए है कि चाहे हम जितने भी हमारे कर्तव्य से विमुख हो जाए परन्तु भारतीय संस्कार एवं धर्म हमे सभी क्षेत्र में जुड़े रखने में सहायता करता है |

प्रवास जाने का दो कारण रहता है। एक है अच्छी नौकरी के तलाश में और दूसरा अच्छी पढाई करने केलिए। पर जब विदेश में धीरे-धीरे रहने लगते है वहां की संस्कृति में ढल जाते है। जब बच्चे जन्म लेते है तो वे विदेशी संस्कृति को अपनाते है। अपने मूल संस्कृति का ज्ञान

Copyright © 2020 Authors

उन्हें नहीं रहता है। इसी सम्बन्ध में प्रवासी साहित्यकार इल्ला प्रसाद**'कुंठा'** कहानी के माध्यम से भारतीय प्रवासियों बच्चों के जीवन शैली के ऊपर लिखती है कि – "यहाँ अमेरिका में बच्चें माँ-बाप की एकदम नहीं सुनते। सेहत का ख्याल भी नहीं रखते। केवल पिज्जा और मैकडोनाल्ड के सैंडविच खाते हैं। ऊपर से ल ऐसे हैं की कुछ बोले तो ९११ कॉल करके पुलिस बुला लेते हैं |"[7] इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह कहना चाहती है कि- विदेशी शैली बच्चों को ऐसा बना दिया है की जो खाना माता-पिता को स्वादिष्ट नहीं लगता है वही खाना बच्चों को बहुत रुचिकर लगता है। और वह कुछ नहीं कर सकते है। ऊपर से उनको यह डर लगा रहता है की कहीं बच्चा पुलिस को न बुलाले। विदेश में रहने के कारण प्रवासी भारतीयों को न चाहते हुए भी अपने जीवन शैली को परिवर्त्तन करना पड़ता है |

अतः प्रवासी साहित्यकारों के साहित्य में हमे प्रवासी भारतीयों के विभिन्न प्रकार के समस्याएँ, कष्ट, पीड़ा एवं संवेदना देखने को मिलता है। उन साहित्यकारों के साहित्य में संस्कृति एवं परम्परा को लेकर जो संघर्ष है, वह हमे ज्यादा देखने को मिलता है। प्रवासी साहित्यकारों का साहित्य अत्यधिक समृद्ध है। जिसमे भारतीय संस्कृति,पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याएँ,नारी का आत्मनिर्भरशीलता, मानवीय संवेदना आदि हार एक पहलु का चित्रण हमे देखने को मिलता है। भारतीयों की सांस्कृतिक संवेदना को हम चाह कर भी बाँध नहीं सकते है। वह स्वयं भारतीयों के पास आ जाता है। वे दूर रह कर भी अपने संस्कृति को साथ लेकर चल रहे है। पाश्चात्य संस्कृति में लिव इन रिलेशनशिप, प्रेम विवाह,प्रेम संपर्क में विच्छेद, पुनर्विवाह आदि को आसानी से ग्रहण कर लेते है। परन्तु भारतीय संस्कृति में यह सब चीज को इतने जल्दी नहीं अपनाते है। जिसके लिए प्रवासी साहित्यकारों को दोनों संस्कृति के टकराव में द्वंद्व पैदा होने लगता है। फिर भी इन साहित्यकारों ने भारतीय संस्कृति का लोप होने नहीं दिए है। उन्होंने भारतीय संस्कृति को बचाने के साथ-साथ अपने मातृभाषा हिंदी को भी अंतराष्ट्रीयता प्रदान कर रहे है |

सन्दर्भ ग्रन्थ :--

१. प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना के विविध सन्दर्भ- डा. प्रतिभा मुदलियार, पृ.सं १०८

२. प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना के विविध सन्दर्भ- डा.प्रतिभा मुदलियार, पृ.सं १०९

 Copyright © 2020 Authors

३. अख़बार वाला (उत्तरायण- कहानी संग्रह)- सुदर्शना प्रियदर्शिनी, पृ.सं ३

४ . चिड़िया और चिल (चिड़िया और चिल- कहानी संग्रह)- सुषमा बेदी, पृ.सं ६९

५. झाड (चिड़िया और चिल- कहानी संग्रह)- सुषमा बेदी, पृ.सं १३२

६. बस एक कदम (सांकल- कहानी संग्रह)- ज़किया ज़ुबैरी, पृ.सं ६१

७. कुंठा (उस स्त्री का नाम- कहानी संग्रह)-इल्ला प्रसाद, पृ सं ९०

 Copyright © 2020 Authors